मान्यताएँ

शमिता और यश अपने छोटे बेटे आर्यन का रिश्ता ढूंढने के लिए बहुत अधीर थे। आजकल इंटरनेट से बेहतर साधन भला और कौन सा है। पति–पत्नि दोनो कम्प्यूटर के सम्मुख बैठकर जो रिश्ते ठीक लगते उनको चिट्ठियाँ भेजते, कहीं ई–मेल का पता मिल जाता तो उसी क्षण मेल कर देते। बहुत बेसब्री से उत्तर का इंतज़ार रहता। ढेरों पत्र व तस्वीरें आने लगीं—आख़ीर आर्यन डॉक्टर था। उनकी पसंद अमेरिका में पली भारतीय परिवार की कन्याएँ थीं। कई पत्रों में जन्मकुंडली की माँग होती थी। जिन्हे पढ़ते ही यश उनकी दकियानूसी पर चिढ़ जाते थे। कहते,"दुनिया इक्कीसवीं सदी में पाँव रख चुकी है और ये अभी भी बीसवीं सदी में जी रहे हैं। इनके नाम काट दो।"शमिता इन मान्यताओं को मानते हुए भी पति के समक्ष कुछ बोल नहीं पाती थी।

यश शिकागो में एक प्रसिद्ध वकील था। सन् 1970 में वो अमेरिका आकर बस गया था। भारतीय संस्कार व हिन्दू मान्यताओं के अनुरूप शमिता ने अपने दोनो पुत्रों का लालन–पालन किया था। जिस समय उन्होंने भारत की भूमि को त्यागा था—वहाँ की संस्कृति व मान्यताएँ अपने आँचल में बाँध ली थीं। उसी आँचल की छाँव में उसने अपने बेटों—आदित्य और आर्यन को अमेरिका में भी सँभाले रखा था। पूरा परिवार शाकाहारी भोजन ग्रहण करता था। सिगरेट ,शराब से वे सदा परहेज़ रखते थे। बचपन से ही दोनो भाइयों की जिव्हा पर गायत्री– मंत्र का उच्चारण मंजा हुआ था। वे हवन विधी –पूर्वक करते थे। जबकि भारत में जन्मे व पले उन्ही के चचेरे–ममेरे भाई–बहन भारतीय सभ्यता से कोसों दूर पश्चिमी सभ्यता में रंगे हुए थे। यश और शमिता को अपनी आँखों के तारों पर गर्व था।

आर्यन न्यूर्याक के मेडीकल कॉलेज में रेसीडेन्सी कर रहा था। नवम्बर माह के चौथे वृहस्पतिवार को अमेरिका में थैंक्स– गिविंग– डे की छुट्टी होती है। आर्यन ने उससे पहले उसे मिलाकर दस दिनो की छुट्टियाँ ले लीं और ममी पापा को सूचित किया कि 13th को घर पहुँच रहा है। उसके पहुँचने से पूर्व ही सारा होमवर्क पूरा करके यश और शमिता ने पाँच फोटोस फाईनल कर लीं। तभी बड़े बेटे आदित्य का भी फोन आया कि अदिति और वो भी 14th को पहुँच रहे हैं। यह सुनकर वो दोनो प्रसन्नता से झूम उठे। आदित्य लॉसएजिंलेस में कम्पयूटर इंजीनियर था, लेकिन उसकी पत्नि अदिति के पास अभी कोई नौकरी नहीं थी। अदिति यश के दोस्त वीरेन्द्र कपूर की बेटी थी। वीरेन्द्र और ममता ने भी अपनी बेटी को ऊंची शिक्षा व उत्तम संस्कार दिए थे। अदिति बहुत सुन्दर व सुलझे विचारों वाली बहू थी। सास–ससुर का आदर सत्कार व देवर को स्नेह करती थी। यह तो सब इच्छानुकूल था, किन्तु अब दूसरी बहू कैसी मिलेगी,यही चिन्ता सबको खाए जा रही थी। तभी तो बहुत सोच– विचार कर चुनाव किया जा रहा था।

आर्यन की फ्लाईट साँझ ढले पहुँची तो आदित्य की फ्लाईट सुबह की थी। एयरपोंट पर पापा के स्थान पर अचानक आर्यन को सम्मुख देखकर आदित्य व अदिति की खुशी से बाँझें खिल गईं कि अब आएगा मज़ा छुट्टियों का। दोनो भाई एक – दूसरे की कमी को बहुत महसूसते थे। करते भी क्या ? उनका परिवार अमेरिका के पूर्वी छोर न्यूयार्क से लेकर पश्चिमी छोर कैलिफोर्निया तक फैल गया था। ममी – पापा भी फोन के आसरे समय बिताते थे। इसके अलावा कम्प्यूटर पर बातचीत या चैट करना व ई – मेल पर संदेश भेजना , शमिता इन सब के सहारे बच्चों से दूर जी लेती थी।

अमेरिका में थैंक्स– गिविंग पर सारा परिवार एकत्र होता है। यश का परिवर भी उसी के अनुरूप एकत्र हो गया था , सब के आनन्द की सीमा बढ़ गई। घर में उल्लास छा गया था। दोपहर का खाना खा चुकने के पश्चात् सब इकट्ठे बैठे तो यश ने शमिताा को इशारा कियाऔर लगी होने बातें रिश्तों की। एक के बाद एक लड़कियों की फोटोस दिखााई गईं। सब के गुण सर्व प्रकार से आर्यन व परिवार के अनुकूल थे। मसला अटक रहा था इस बात पर कि किसे कब बुलाया जाए कि आर्यन व वो एक दूसरे को मिल सकें। जिससे बात आगे बढ़ सके। जब तक लड़का– लड़की एक – दूसरे को पसंद नहीं करते ,बात बन ही नहीं सकती थी। घूम फिर कर सब की दृष्टि आर्यन पर जम जाती थी। उधर आर्यन के चेहरे पर निर्विकार भाव थे। प्रत्युत्तर में वो कुछ भी नहीं कह रहा था। अपने सम्मुख बैठे चेहरों के प्रश्नसूचक भाव वो अपनी शून्य में टिकी दृष्टि से झेल रहा था। मानो इस चर्चा से उसका दूर तक कोई संबंध ही नही है। जब यश को दाल में कुछ काला लगा तो उन्होंने चर्चा का विषय ही बदल दिया। बोले, "मैंने किसी केस की फाईल तैयार करनी है । चलो, रात को मिलते हैं सब– – –"और महफिल छँट गई।

आर्यन ऊहापोह की स्थिती में था कि मन की बात कैसे करे? वह मन के भेद सर्वप्रथम भाई के सम्मुख खोलना चाहता था व अभी तक उसे उचित मौका नहीं मिला था। वैसे आदित्य के आ जाने से उसे राहत अवश्य मिली थी। रात के खाने के पश्चात् दोनो भाई सैर को निकल गए। रास्ते में आर्यन ने बताया ",भैया ,मेरे जीवन में कोई है। एक बार मैडिकल कॉलेज में कोई फंक्शन था, डाँस पार्टी चल रही थी। अधिकांश छात्राओं ने खुले गले व नग्न कंधों वाली लम्बी ड्रेसेस पहनी हुई थीं। सब एक जैसी दिख रही थीं कि उसी समय सिर पर ऊँचा जूड़ा ,गले में श्वेत मोतियों की एक लड़ी, ढँके कँधों वाली बिन बाँहों की लम्बी काली ड्रेस व ऊँची एड़ी के काले बूटों में एक साँवली सी ,बेहद आर्कषक लड़की ने हॉल में प्रवेश किया। आर्यन जिस कोने में खड़ा था,वहाँ से उसकी दृष्टि उस पर अटक के रह गई। वो अपनी किसी सहेली से मिल रही थी। अचानक आर्यन ने देखा कि कोल्ड ड्रिन्क्स के काउंटर पर एक नटखट लड़का सभी गिलासों में थोड़ी -थोड़ी शराब भी मिला रहा था। यह दोनो सहेलियाँ भी उसी जगह कोल्ड ड्रिन्क्स लेने पहुँचीं। दोनो ने जैसे ही गिलास मुँह को लगाए कि आर्यन ने बिजली की तेजी से जाकर उनको धक्का दिया ;जिससे उनके गिलास गिर गए। दोनो का मूड बिगड़ गया, वो उसको गुस्से में कुछ कहने ही लगीं थीं कि तभी उसने ऊँचे जूड़े वाली का हाथ पकड़कर एक कोने में खींच लिया। इस बदतमीज़ी पर पहले उसने झटके से अपना हाथ छुड़ाया फिर उसे तमाचा रसीद करने ही वाली थी कि आर्यन ने उसका हाथ वहीं रोक कर उसे वास्तविकता बताई। पूरी बात सुनते ही वो पानी-पानी हो गई व क्षमा याचना करने लगी। रिया शर्मा—आर्यन मल्होत्रा, दोनो ने अपना अपना परिचय दिया व मुस्कुरा उठे। आर्यन भी वहाँ बिना पार्टनर के था,सो दोनो उस डाँस में पार्टनर बन गए। इस तरह दोनो की दोस्ती की नींव पड़ गई, जो धीरे -धीरे प्रेम के रंग में रंग गई है। अब आप ही सँभालो सब कुछ- ।"

आदित्य ने प्यार से उसका कंधा थपथपाया व बोला,"यार, अब तो बात बन गई समझ। पहले ममी को बताते हैं फिर आगे बढ़ेंगे।"अपने उच्च आदर्शों व कुलीन संस्कारों के कारण आर्यन परिवार में खुलकर कह नहीं पाया था कि उसे किसी से प्रेम हो गया है - वो उसीसे विवाह करेगा वगैरह — वगैरह। तभी आर्यन ने कहा,"भैया !एक और बात भी है। रिया मुझ से एक वर्ष सीनियर है— — यानि कि उम्र में बड़ी है। पर हाँ ,देखने में छोटी लगती है। आदित्य ने उम्र की बात को तूल न देते हुए उसे बधाई दी कि वो भारतीय है न ; चलो माँ को खुशखबरी देते हैं।

जब तक वो दोनो सैर से वापिस आए— दोनो सास- बहू रसोई सँभालकर डिशवाशर में बर्त्तन लगाकर बस बाहर निकल ही रही थीं कि आदित्य ने पीछे से जाकर माँ को दोनो बाहों से घेरकर लाड़ दिखाया व बोला, "मम्मी आपकी सबसे बड़ी चिन्ता दूर कर दूं तो क्या दोगी?"मम्मी ने सामने खींचकर उसका माथा चूम लिया व प्रत्युत्तर में बोलीं,"मेरी चिन्ताएं भी तुम लोगों की हैं और उनका निवारण भी तुम लोगों ने करना है। मैं क्या दूंगी बेटे ? मेरा सब कुछ तुम्हारा ही तो है। तुम लोगों को देखकर तो जीवन चलता है। तुम्ही पर आस है विश्वास है।"भर आई आँखों की कोरों में तैरते आँसुओं को वहीं रोकते हुए वे मुस्कुरा के बोलीं, "बताा तो कौन सी चिन्ता दूर कर रहा है मेरी— — ?"आदित्य खिलखिलाता हुआ नटखट अंदाज़ से आर्यन को इंगित करते हुए बोला, "तुम्हारी छोटी बहू ढूंढने की। आर्यन ने स्वंय ही अपने लिए बहू चुन ली है।" अदिति ने अर्थभरी दृष्टि से आर्यन को देखा व मुस्कुराई। वो नज़रें झुकाए मुस्कुरा रहा था। मम्मी ने हर्षातिरेक से आर्यन को दोनो बाहों से पकड़ लिया व बोलीं, "सच बदमाश कहीं का !एक बार भी चर्चा नहीं की हमसे। हम यूं ही सिर खपाते रहे , समय बर्बाद करते रहे। यदि हम कहीं पक्का कर देते तो?खैर— — बता कैसी है? कहीं कोई नीली - हरी आँखों वाली तो नहीं है? जल्दी बता-"। आर्यन मम्मी से लिपट गया। उसे बहुत चैन मिल रहा था। बोला,"मम्मी! रिया शर्मा वहीं न्यूयार्क में मैडिकल कॉलेज में है। उसके पापा के मेरीलैंड में दो इंडियन रेस्टोरेंट हैं। छोटा भाई वर्जीनिया-टैक में मैडीसन कर रहा है।"भारतीय परिवार— वो भी अमेरिका में! लड़की डॉक्टर और आर्यन की पसंद है। यह सब जानकर शमिता के सिर पर से मनों का बोझ उतर गया। उसने ईश्वर को कोटिश धन्यवाद किए मन ही मन व आर्यन का माथा चूम लिया। शमिता ने उसी क्षण यश को उत्साहपूर्वक सारा किस्सा वर्णित कर दिया। आर्यन एक बार जो खुला तो बस फिर खुलता ही चला गया। भाभी ने भी देवर की चिकोटियाँ लीं। सब ने रिया की फोटोस देखीं। वाओ! वैरी स्मार्ट! ! क्या दिखती है? बस फिर तो पूछो न,पापा ने भी आर्यन की पीठ ठोंकी , "मेरे बेटे ने कामल का चयन किया है। बेटा ! रिया के पापा का फोन नम्बर दो। अभी बात करते हैं उनसे। भई, हम लड़के वाले जो ठहरे।"

रात को हँसी –खुशी के माहौल में सब सोए। तय हुआ कि सुबह नाश्ते के बाद बात करेंगे। उधर रिया के ममी– पापा को भी रिया ने आर्यन के विषय में बता दिया। वे भी मल्होत्रास से बात करना चाह रहे थे। खैर..... नाश्ते के बाद सब ने रिया से बात की। उसके पापा मि. तरूण शर्मा व ममी राज शर्मा से ढेरों बातें हुई। फलस्वरूप दोनो की सगाई की रस्म थैंक्स– गिविंग वाले दिन मेरीलैंड में करना निश्चित कर दिया गया। कुछ करीबी दोस्तों को साथ ले सब मेरीलैंड फ्लाय कर गए। आर्यन और रिया बेहद प्रसन्न थे। दोनो के माता –पिता ने बिना किसी रोक –टोक के उनका संबंध हार्दिक रूप से स्वीकारा था। अमेरिका में छुट्टियों को देखकर ही सारे मुहूर्त निकाले जाते हैं। लगते हाथ वहीं पर अगले माह अर्थात् चौबीस दिसम्बर का विवाह पक्का कर दिया गया। "चट मंगनी पट शादी"—चारों ओर उल्लास छा गया। दोनो परिवारों ने कमर कस के तैय्यारी आरम्भ कर दी। शादी शिकागो में होनी तय हुई। यश ने होटल बुकिंग आदि के प्रबंध किए और अपने मित्रों को ढेरों निर्देश देकर , शमिता को साथ लेकर भारत के लिए प्रस्थान किया।

सुख़ –दुख में इंसान अपनो को ढूंढता है। भारतीय विश्व के किसी भी कोने में रहें, उनकी जड़ें तो भारत में हैं। ये दोनो भी अपने सगे –संबंधियों को मिलने , उनसे खुशी बाँटने व शादी में उनकी सलाह से शॉपिंग करने दिल्ली आ गए थे। यश ने तीन दिनों में ही कार्ड छपवाकर अमेरिका भेज दिए व उसके दोस्तों ने हफ्ते में कार्ड बाँटने का काम कर भी दिया था। शमिता का शॉपिंग कर– कर के बुरा हाल था। उन्होंने पंजाब में भी दो– तीन जगह निमंत्रण देने जाना था। समय कम था फिर भी अपने भाई –भाभी, ननद, देवर –देवरानी की अमेरिका की टिकटें भी अपने साथ बुक करवा लीं थीं उसने आते ही। सर्दियों में पंजाब दिल्ली में धुंध बहुत होती है। पंजाब जाकर इनका सर्दी से बुरा हाल था। लुधियाना से शमिता की बड़ी बहन को साथ लेकर चौदह दिसम्बर को सुबह नौ बजे ये लोग टैक्सी में दिल्ली के लिए निकले कि शाम को धुंध गिरने से पूर्व ही दिल्ली पहुँच जाएंगे। लेकिन धुंध इतनी अधिक थी कि सड़क पर अगली गाड़ी तक दिखाई नहीं देती थी। सोनीपत तक पहुँचते चार की जगह आठ घंटे लग गए थे। थोड़ा आगे आने पर बांई ओर की कच्ची सड़क से कोई ट्रेक्टर– ट्राली धुंध के कारण ठीक से दिखाई न देने से कार के साथ आ टकराई व कार को ढकेलती बीच डिवाइडर तक ले गई। पल में जैसे आसमान फट पड़ा—ड्राईवर तो बेचारा वहीं ढेर हो गया। यश उसके साथ की सीट पर थे , उनका सिर व चेहरा खून से लथपथ था कि पहचानना कठिन हो रहा था। शमिता व बड़ी बहन को भी चोटें आई थीं ,पर शमिता को होश था। शमिता ने किसी तरह अपने को बाहर निकाला व पीछे आती गाड़ियों से मदद माँगी। सबने मिलकर उन्हें दिल्ली पहुँचाया। दिल्ली पहुँचने से पूर्व खून अधिक बह जाने के कारण यश ने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। शमिता की दुनिया लुट गई। उसका सारा उत्साह ,सारा जोश—दुख–दर्द व चिन्ता में बदल गया। वो तो दोनो हाथों से अपने आँचल में खुशियों के फूल बटोरने में लगी थी। पर उसका आँचल काँटों से छलनी हो गया था। वो भीतर से लहू लुहान..... हो चुकी थी।

उसका मस्तिष्क तीव्र गति से दौड़ रहा था। उसने सबको कड़े निर्देश दिए कि कोई भी अमेरिका इस विषय में फोन नहीं करेगा। आर्यन की शादी उसी दिन होगी। सब अवाक् उसकी बातें सुन रहे थे। सबने समझाया कि बच्चों को बुला लो, पापा के अन्तिम दर्शन कर लें ,आर्यन की शादी अगले वर्ष कर लेना—लेकिन वो हठीली नहीं मानी। उसने अपना कलेजा पत्थर का कर लिया था। विधी –पूर्वक पति का अन्तिम– संस्कार करके उसने चौथा भी किया। वो धैर्य की प्रतिमा बन गई थी। अब वो अपने बच्चों की खुशी उन्हें देना चाहती थी। वो प्रतिदिन बच्चों को फोन कर देती थी। चौथा करके सत्रह दिसम्बर को उसने आदित्य को फोन किया कि हम कल चल रहे हैं। एयरपोर्ट पर तीन कारें लेकर आना।

शिकागो के ओहेर अर्न्तराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर माँ को सफेद साड़ी व बिन बिन्दी के देखकर दोनो भाई व उसका मित्र हैरान व परेशान हो गए। सब रिश्तेदारों के पाँव छूने के बाद भी ,पापा को कहीं भी न पाकर दोनो भाई माँ की ओर लपके। "ममी! पापा कहा हैं ? क्या कहीं छूट गए हैं ? क्या हुआ?बोलो ममी?"..... शमिता क्या बोलती ? रोती हुई आगे बढ़कर उसने दोनो को अपनी छाती से लिपटा लिया व बोली,"पापा हमें छोड़ गए हैं –कभी भी न आने के लिए। "रास्ते में सारी बात पता चलने पर ,घर पहुँचकर दोनो फूट– फूटकर रोए। आर्यन अपने बाल नोचने लगा कि वो शादी नहीं करेगा। उसे अपने पापा चाहिए। यश के ढेरों दोस्त उनका स्वागत करने के लिए उनके घर आए हुए थे, घर फूलों से सजाया हुआ था। शमिता को देखकर सब रोने लगे। शमिता शांत ,अविचल ,गहन –गंभीर सब को सांत्वना दे रही थी। इतना धैर्य ! .....इतना संयम! सब हैरान थे उसके आत्मिक बल पर। आर्यन ने मेरीलैण्ड फोन किया तो

पता चला वो बीस लोग रात की फ्लाईट से शिकागो पहुँचने वाले थे। अर्थात् तीर कमान से निकल चुका था। शमिता इस पर बोली,"मेरा त्याग निष्फल नहीं जाएगा। मेरी बहू निश्चित दिन ही मेरे घर आएगी।"

शादी की पूरी तैय्यारियाँ हो चुकी थीं। शर्मा एंड पार्टी जब पहुँचे तो पछताने व सिर धुनने लगे। शमिता ने सबसे कहा कि बच्चों की सारी रस्में विधीपूर्वक होंगीं। यंत्रचलित सा विवाह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। शमिता शगुनों भरी डोली तारों की छाँव में घर लाई। उसने भी अपने बेटे के शगुन के लिए क्रीम साड़ी पर हल्के गुलाबी रंग की चुन्नी ओढ़ी व दुल्हन –दूल्हे के सिर पर से पानी का लोटा वारा। (पंजाब में बेटे की शादी के समय विधवा माँ भी सुहाग की गुलाबी चुन्नी ओढ़ लेती है। अर्थात् अब बेटे की ख़ुशी से उसने अपने को रंग लिया) शिकागो व मेरीलैण्ड में सब जान पहचान वालों में शमिता के धैर्य की चर्चा थी। शादी के बाद आर्यन व रिया अपनी पढ़ाई पूरी करने न्यूयार्क चले गए। सब रिश्तेदारों के भारत वापिस जाने के बाद आदित्य ने अदिति को ममी के पास भेज दिया। रिया की रेसीडेन्सी पूरी होने पर शिकागो के एक अस्पताल में उसकी नौकरी लग गई। अब वो ममी के पास आ गई जिससे अदिति वापिस चली गई। पापा की प्रथम बरसी पर सब इकट्ठे हुए तो ममी ने आर्यन से कहा कि अब गुस्सा छोड़ो,तुम लोग हनीमून पर कहीं घूम आओ। दोनो बोले कि अगले वर्ष आर्यन की फाईनल परीक्षा के बाद जाएंगे। और बात टल गई।

इस बीच अदिति ने एक प्यारी सी बेटी **पाखी** को जन्म दिया। पाखी के आ जाने से घर– परिवार का माहौल पुन: माधुर्य से भर उठा। चार जुलाई को अमेरिका की इन्डिपेन्डेंस– डे की छुट्टी होती है। रिया ने उस हफ्ते के साथ एक और हफ्ते की छुट्टी ले ली व आर्यन तो फाईनल्स के बाद फ्री ही था। दोनो ने हनीमून पर साऊथअमेरिका में ब्राज़ील जाने का प्रोग्राम बना लिया। न्यूयार्क से रियोडिजैनिरियो की फ्लाईट बुक करवाई। रास्ते में दो दिनो के लिए मेरीलैण्ड रिया के ममी– पापा को मिलने रूके। जाते समय पापा ने विशेष जोर देकर समझाया कि वहाँ क्राइम अर्थात् अपराध और ग़रीबी का बोलबाला है। अलग से टैक्सी लेकर मत घूमना; कहीं कोई लूट ही न ले , लग़्ज़री बसों में ही घूमना। दोनो ने बात पल्ले बाँध ली।

उनकी बुकिंग शैरेटन रियो होटल्स एंड टॉवर्स में थी। वहाँ की नैसर्गिक छटा में मनमोहक प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर दोनो का मन उल्लास से झूम उठा। अगली सुबह होटल की गाड़ी लेकर वो शहर देखने का मोह नहीं त्याग सके। वहाँ के रंगीन पत्थर यानि कि जैम्स रिया को आकर्षक लगे, उसने कुछ ख़रीदे भी। आर्यन ने अगले दिन की बस की बुकिंग भी करवा ली लगते हाथ। अति प्रफुल्ल मन से अगली सुबह दोनो सात बजे रोडोवियेरिया बस स्टेशन पर संसार प्रसिद्ध **इग्वाकु जलप्रपात** दिखाने जाने वाली लिएटोस लग़्ज़री बस में बैठ कर , जिसमें देश विदेश से आए आठ सैलानी और भी थे; पहाड़ी रास्तों पर चल पड़े। प्राकृतिक सौन्दर्य की अतुल धन सम्पदा आँखों में समेटते हुए वे हर्षित थे। मीलों दूर से पानी की गर्जन सुनाई दे रही थी। गाईड ने बताया कि इग्वाकु नदी का यह धुँआधार जलप्रपात **2. 5** मील लम्बी पर्वतीय ऊंचाइयों से **269** फीट नीचे गिरता हुआ **275** जलप्रपातों का मिला जुला स्वरूप है। इग्वाकु नदी पर एक सकरा पुल है ,जिस पर विश्व के हर कोने से आकर हज़ारों लोग **डैविल्स थ्रोट या शैतानी गर्दन** के कुछ फ़ासले तक कैट वॉक अर्थात् एक सकरी पट्टी पर सावधानी पूर्वक नाप कर कदम रखते हुए —होकर आते हैं। यह सबसे डरावनी,भयावह और अवर्णनीय चाल होती है।

वहाँ पहुँचकर दूऽऽऽऽर तक उड़ते पानी के छींटों में भीगते हुए वे दोनो किलकारियाँ मार कर जोर – जोर से हँसते रहे व ढेरों फोटोस खींचकर वहाँ की यादें कैमरे में कैद करते रहे। रिया ने आर्यन का ऐसा खिला रूप और उन्मुक्त व्यवहार प्रथम बार देखा तो उसका सम्मोहन उसके लिए और बढ़ गया। पहली बार वो जीवन के दुख– दर्द से परे व काम– काज और पढ़ाई से हटकर अल्हाद से भरकर मस्ती में झूम उठे थे। अन्य सैलानियों की देखा– देखी इन दोनो ने भी हिम्मत जुटाकर यह कैट– वॉक कर ही डाली। यह मौत से कम भयावनी नहीं थी। एक कदम भी गलत पड़ता तो सामने मौत थी। दोनो बहुत उत्साहित थे। दोनो का सारा दिन एक –दूसरे की बाँहों में हँसी– ख़ुशी बीता। साँझ ढलने से पूर्व ही बस वापिस चल पड़ी। यात्री इतने थक गए थे कि बस में बैठते ही सब ऊंघने लगे थे। तकरीबन डेढ़ घंटे बाद शायद ड्राइवर की भी पलक झपक गई क्योंकि उस पहाड़ी रास्ते के एक अंधे मोड़ पर बस उसके काबू से बाहर हो गई व खाई में गिरने लगी। तभी आर्यन जो कि एमरजैंसी एग्ज़िट के साथ बैठा था,सबसे पहले उसके खुलने से बाहर खाई की ओर पत्थरों पर गिर गया। उसी पल बस भी खाई की ओर गिरी व पत्थरों पर अटक गई। दुर्भाग्य से आर्यन का शरीर बस के नीचे दब गया। बस के भीतर कोलाहल मच गया। सब यात्री एक दूसरे के

ऊपर गिरे चीख रहे थे। ऊपर रखा सामान उनके ऊपर गिर गया था। शीशे टूटने व गिरने से सब ज़ख्मी हो गए थे व बेहोश थे। पीछे से आती बस ने देखा तो बचाव टीम को वायरलैस पर संदेश भेजा। अति सावधानी से ड्राइवर ,गाईड व अन्य नौ यात्रियों को जो खून से लथपथ थे पर जीवित थे, बाहर निकालकर एम्बुलेंस में डाला गया। आर्यन का भाग्य उसे डैविल्स थ्रोट से तो बचा लाया था,लेकिन दुर्भाग्य ने बीच राह में उसे दबोच ही लिया था। उसके छितरा गए अंग – प्रत्यंग बटोरकर — एक बैग में डालकर रियो लाए गए। रिया की कमर की हड्डी टूट गई थी,व चेहरा चोटों से भरा हुआ था उसे होश नहीं था। उनके बैग से पासपोर्ट व होटल का पता लेकर उनके घर सूचना भेजी गई। शिकागो में शमिता अपनी सहेली मीरा को शादी की फोटोस दिखा रही थी। आधा फोन सुनते ही चीख मारकर वो वहीं गिर गई व बेहोश हो गई। बाकि का फोन मीरा ने सुना। वो भी काँप उठी। उसने आदित्य को व सब पहचान वालों को फोन किया। उधर राज व तरूण शर्मा ने भी रो –रोकर बुरा हाल कर लिया। राज के भाई ट्रेवल एजेंट थे। राज ने आपात् कालीन कोटे से दो टिकटें ब्राज़ील की बुक करवाई और भाई को साथ लेकर बच्चों को लेने चल पड़ी। तरूण को दिल की बीमारी थी, इसलिए उसे घर पर ही ठहरना पड़ा। सब मित्र –परिवार पलक झपकने की देर में उनके घर एकत्र हो गए थे। आदित्य व शमिता भी कुछ मित्रों के साथ वहीं पहुँच गए, क्योंकि आर्यन और रिया को वहीं लाया जा रहा था।

तरूण व राज के मित्रों ने इस कठिन दुख की घड़ी में सब मेहमानों के ठहरने व खाने–पीने का सारा प्रबंध स्वंय ही आपस में अति सुनियोजित ढँग से बाँट लिया था। राज को सारी कार्यवाई निपटाते वहाँ पाँच दिन लग गए। छठे दिन पट्टियों में लिपटी अपनी विधवा जवान बेटी और जवान दामाद के अंग बटोरकर वो घर लौटी। लोकल रेडियो पर भी यह समाचार दे दिया गया था। उनके पहुँचते ही हाहाकार मच गया। आर्यन के अंग तो विधी– पूर्वक दाह–संस्कार करने के लिए लाए गए थे, किसी को दिखाए नहीं गए। पट्टियों में लिपटी रिया के होंठ "आर्यन"के स्पदंन करते फिर ख़ामोश हो जाते थे। उसके कानों ने आर्यन की मृत्यु की चर्चा सुन ली, वो तड़प उठी। वो उठने की स्थिती में नहीं थी। उसकी पनियायी आँखों से अविरल अश्रुधाराएं बह रही थीं। पलंग पर लेटी हुई वो स्थिर दृष्टि से ऊपर तकती रहती। शमिता का धैर्य अब जवाब दे गया था। दाह–संस्कार के पश्चात् वो आदित्य के ऊपर गिरकर बेहोश हो गई। जब पति उसे छोड़ गया, तो उसने अपने को बच्चों के लिए सँभाल लिया था। किन्तु जवान पुत्र के मरने से वो बुरी तरह टूट गई थी। उसे नींद का इंजैक्शन देकर लिटा दिया गया। जिस बैड– रूम में शमिता को सुलाया गया था, वहीं रिया की मामी अपनी बहन के साथ बैठी बातें कर रही थी। शमिता ने अर्धविक्षिप्त सी अवस्था में उनकी जो अनहोनी बातें सुनी, उनसे उसके जीवन का स्वरूप ही बदल गया।

"रिया के ग्रह बहुत भारी हैं ,पता !वो मँगलीक है। यह सब तो होना ही था। मँगलीक ग्रह का जोड़ीदार भी मँगलीक ही होना चाहिए। नहीं तो दूसरे पर इतना भारी पड़ता है कि दूसरा मृत्यु के गार में समा जाता है। कभी –कभी तो सारा परिवार ही नष्ट हो जाता है। राज ने सब जानते हुए भी अपनी बेटी को रोका नहीं। वो बेचारी पति को कैसे भुला पाएगी?यह अच्छा नहीं हुआ।"

इससे आगे शमिता को कुछ सुनाई नहीं दिया। चल–चित्र की भांति उसके समक्ष सारा अतीत घूमने लगा। यश ने तो जन्म–कुंडली मांगने वाले रिश्तों को सदा नकारा था। क्या ग्रहों का प्रकोप इतना भारी होता है!उसने तो हिन्दू संस्कृति की मान्यताएँ सदा स्वीकारी थीं। फिर यहाँ वो कैसे चूक गई। काश! वो बीता समय लौटा सकती। सगाई के होते ही यश की आकस्मिक मृत्यु और हनीमून पर केवल आर्यन का बस के नीचे दबकर मरना.....सब कड़ियाँ आपस में जुड़ने लगीं। शमिता का सिर चक्की के पाट की तरह घूमने लगा। उसे लगा, वो एक गहरी खाई में गिरती जा रही है–– –अब डूबती जा रही है– – – – और – – – डूबती ही जा रही है!!!

— — —